ऋषिरा. चारफा. नरका. नेमिछं. प्रदुच्. प्राचीसं. शंगामं. षडाबा. वरसे (सं.वृष्ट परथी); जुओ बुठा बुढुं नरका. विषप्र. वध्यं, वहां, चाल्युं (सं. वृध्); जुओ वुढऐ, बूढ बूसट उक्तिर. बूसट, तमाची बृहरीइ अभिऊ. व्यवहार करीए (सं.व्यवह) बुहा जिनरा. वह्या, [उपाड्या, कयी] वृक "प्रेमाका. [वरु] [सं.] **वृख** जुओ वर्ख वृष्ट्य आरारा. वृक्ष **वृतंतू** गुर्जरा. वृत्तांत **क्रुत** *चंद्रवा*. व्रत; [वरत, कोयडो] वृत्तिइं *उपजा. -*नी जेम वृत्तिसंखेप आरारा. वृत्तिसंक्षेप, बाह्य तपनो एक प्रकार, खावुं-पीवुं वगेरे भोग ओछा करता जवा ते जि.] **वृत्य, वृत्य** अखाका. अखेगी. चित्तसं. सिंहा(शा). वृत्ति, [मनोवृत्ति, चित्त-वृत्ति]; अखेगी. वृत्ति, [व्यवहार]; प्रेमाका. वृत्ति, आजीविका वृथा (इथा) सिंहा(शा). व्यथा **वृद्धतर कादं(शा)**. घडपणनो (सं.वृद्धत्व) **वृद्धि शांतिक** नरका. कुळनी वृद्धि अने शांति माटे करवामां आवतो धार्मिक विधि वृद्धि-श्राद्ध प्रेमाका. [पुत्रजन्म जेवा मंगळ

प्रसंगे] कुळनी वृद्धि माटे करवामां

क्य *आनंस्त. [धर्म] [सं.] **वृन्दारक** *ऐतिका.* देवता [सं.] कृषमान-तनवा, कृषपानुतनवा अखाका. नरका. वृषभानु राजानी पुत्री, सधा **ब्रह** नंदब. सिंहा(शा). विरह **वृहज्जड** *गुर्जरा. विराप.* बृहन्नला, विराटने त्यां रहेल अर्जुननुं नाम [सं.] **ब्रहेद** अंबरा. बृहञ्जला, नपुंसक **बुंदल** *प्रेमाका*. नपुंसक, व्यंढळ वृंदा नरका-२. तुलसी (वनस्पति) [सं.] वृंदारबाटिका ग्रेमप. तुलसीनी वाडी [सं.] वे *अखाका*. ते. तेओ वे चतुचा. प्राचीका. प्रेमण. वय, उंमर; जुओ लघु-वे वे आरारा. वचन, वाणी (सं.वचस्) वेअण नेमिछं, वेदना वेइ षडाबा. अनुभवे, भोगवे; ऋषिरा. शुंगामं. जाणे (सं.वेद्) **बेउल** उक्तिर. गुर्जरा. चारफा. वसंफा. वसंफा(ल). वसंवि(ब्रा). हरिवि. विचिकल लता; जुओ बेउल **देउव्विय** *ऐतिका.* विकूर्वना करी, [दिव्य सामर्घ्यथी उत्पन्न करी]; जुओ विकुर्वइ वेकार प्रद्युचु. संगीतकार, [गायक]; जुओ **७**यकारु **बेख** *दशस्कं(१)*. वेष: *अखाछ. मदमो*. वेष, भेख: हरिवि. वेष, [रूप]; जुओ विख वेख्युं *प्रेमाका.* [*चमत्कारिक शक्तिथी रूपरिवर्तन कर्युं], विस्तृत कर्युं; जुओ विकुर्वइ

वृध चंद्रवा. वृद्धि

आवतुं श्राद्ध [सं.]